ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 149-152

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

एकल महिलाओं की मनो–सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

1. मीरा देवी
2. डॉ0 नेहा मिश्रा

1. शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र (नेट/जे.आर.एफ.) 2. शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य, समाज कार्य विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0), भारत

Received-04.06.2024, Revised-11.06.2024, Accepted-17.06.2024 E-mail: meeray671@gmail.com

सारांशः ***इस शोध को इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है कि इसमें एकल महिलाओं की मनो–सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया गया है. चूँकि महिलाओं के संबंध में अनेक अनुसंधानों के उपरांत भी एकल महिलाओं को केंद्र में रखकर बहुत ही कम अनुसन्धान हुए हैं. इसलिए इस शोध की महत्ता बढ़ जाती है. प्रस्तुत शोध में मुख्यतः एकल महिलाओं की मनो–सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का वैज्ञानिक विधियों के आधार पर विश्लेषण किया गया है. लखनऊ जनपद से कुल 60 उत्तरदात्रियों को निदर्श के रुप में सम्मिलित किया गया है. साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आँकड़ों को संकलित किया गया है. आँकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष एकल महिलाओं के समक्ष उत्पन्नं समस्याओं की जानकारी उपलब्ध कराते हैं. एकल महिलाओं को अकेलापन, सुरक्षा, शोषण, भेद–भाव, आर्थिक चुनौतियों, अशिक्षा जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है. बदलते परिदृश्य में सकारात्मक बदलाव अवश्य परिलक्षित होते है, लेकिन आधुनिक समय के मांग के अनुरूप वह पर्याप्त नहीं हैं. शासन और समाज की उपेक्षा का दंश अभी–भी उन्हें झेलना पड़ता है. अभी–भी उन्हें सहारे की जरुरत पड़ती है।***

कुंजीभूत शब्द– एकल महिला, मनो–सामाजिक समस्या, आर्थिक समस्या, समाज, अनुसंधानों, अकेलापन, आधुनिक समय, संकलित।

'जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा तब तक विश्व कल्याण नहीं हो सकता हैं। किसी भी पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना संभव नहीं है'– स्वामी विवेकानंद. समाज व देश के विकास के पैमाने के रूप में महिलाओं की स्थिति को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। इसीलिए कहा गया है कि कोई देश कितना विकसित है यह उस देश में रहने वाली महिलाओं की स्थिति से पता चलता है। भारत में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक महिलाओं की स्थिति में बदलाव आते रहे हैं। जहाँ प्राचीन काल और मध्य काल में महिलाओं की स्थिति दयनीय होती थी, वहीं वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक रूप से बदलाव आया है। जल, थल और नभ में महिलाओं के योगदान को देखते हुए अब महिलाओं की महत्ता को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है और ना ही उनकी क्षमताओं पर किसी–भी प्रकार का संदेह किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध में एकल महिलाओं की मनो–सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया गया है। चूँकि एकल महिलाओं के साथ घर के अंदर और बाहर दोनों जगह भेद–भाव किया जाता है। सामाजिक मान्यताओं के अनुसार एकल महिलाओं पर अनेक वंचनाओं को आरोपित कर दिया जाता है, जो उनके स्वस्थ विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करता है। एकल महिलाएं समाज की वह कड़ी हैं, जो दोहरा दंश झेलती है। एक तो महिला होने का और दूसरा एकल महिला. एकल महिलाएं असहाय रूप से जीवन निर्वाह करती हैं. विडंबना यह है कि अनेक कानून बनने के बावजूद एकल महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं आया है। एकल महिलाओं के प्रति समाज की गन्दी नजर बनी रहती है। लोग उन्हें अपने लिए हमेशा प्रस्तुत समझते हैं। यह बीमार मानसिकता एकल महिलाओं के प्रति अपराधों को बढ़ावा देती है। समस्या और गंभीर तब हो जाती है, जब जिनके ऊपर एकल महिलाओं के सुरक्षा और सरंक्षा की जिम्मेदारी है, वही उनके शोषण के लिए आतुर हो जाते हैं। महिलाओं के प्रति होने वाले अपराध संबंधी आँकड़ें बताते हैं कि महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों में सर्वाधिक भागीदारी उनके संबंधियों की होती है, जो अपराध कारित करते हैं।

केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा बनाये गये अनेक कानून, योजनायें और संविधान में किये गये अनेक प्रावधान भी एकल महिलाओं की स्थिति सुधारने में महत्त्वपूर्ण योगदान नहीं दे पाए हैं। लचर न्याय प्रणाली के कारण एकल महिलाओं को न्याय प्राप्त करने में भी अधिक समय लगता है। योजनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण एकल महिलाओं को समुचित लाभ नहीं मिल पाता है। अशिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण एकल महिलाओं में कानूनों के प्रति जानकारी नहीं होती है, जिससे उनके शोषण में वृद्धि होती है। परिणामस्वरूप अनेक प्रकार की समस्याओं जैसे– मनो–सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य आदि होती हैं।

साहित्य समीक्षा–

1. डॉ. जाकिया रफत (2018), शोध जर्नल 'शोध मंथन' में प्रकाशित शोध शीर्षक 'एकल अविवाहित महिलाओं की समस्याऐं तथा चुनौतियां' शोध अध्ययन से स्पष्ट है कि 13.3 प्रतिशत महिलायें अकेलापन अनुभव करती हैं और 20 प्रतिशत एकल महिलाएं मनोवैज्ञानिक समस्याओं से पीड़ित हैं तथा 40 प्रतिशत महिलाएं भविष्य के प्रति असुरक्षा प्रकट करती हैं। अध्ययन में सम्मिलित 26.7 प्रतिशत एकल महिलाओं को जीवन उद्देश्यहीन महसूस करती हैं।

2. सेरेमोय पिऊ कुंडू (2018), 'स्टेट्स सिंगलः द ट्रूथ अॅबाउट बीइंग अ सिंगल वूमेन इन इंडिया' नामक पुस्तक में भारत में एकल महिलाओं के सम्बंध में गढ़ी गयी, धारणाओं का कठोरतापूर्वक खण्डन करती हैं। अपनी पुस्तक में कुंडू ने आत्मनिर्भर एवं पुरुषों की अधीनता से स्वतंत्र महिलाओं के अस्तित्व का समर्थन करती हैं।

3. पृथा दासगुप्ता (2017), 'वूमेन अलोनः द प्रॉब्लम एंड चौलेंजेस आफ विडोज इन इंडिया', शोध शीर्षक में पाया कि भारतीय समाज में विधवा एकल महिलाओं की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। विधवा महिलाएं व्यक्तिगत रूप से दुखी और परेशान तो होती ही हैं, इसके साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक समस्याऐं उन्हें और निर्बल बना देती हैं।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

उद्देश्य–

1. एकल महिलाओं की मनो–सामाजिक स्थिति का विश्लेषण।
2. एकल महिलाओं की आर्थिक समस्याओं का अध्ययन।

समस्या कथन– एकल महिलाओं की समस्याओं के संबंध में समुचित आँकड़ों का अभाव है, जिससे इनकी समस्याओं के संबंध में वास्तविक अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। एकल महिलाओं की समस्याओं के समाधान के लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम उनकी समस्याओं के संबंध में वास्तविक आँकड़ें एकत्रित किये जायें. आँकड़ों के एकत्रण के लिए सामाजिक अनुसंधानों की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत शोध में एकल महिलाओं की मनो–सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के संबंध में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। ताकि एकल महिलाओं की समस्याओं से संबंधित विभिन्न आयामों को समझा जा सके और समुचित निष्कर्ष प्राप्त किये जा सके।

शोध विधि– शोध विधि शोध का एक महत्त्वपूर्ण भाग होता है। शोध को दिशा देने व त्रुटियों को न्यून करने में शोध विधि की भूमिका अविस्मरणीय है। उपयुक्त शोध विधि द्वारा गुणवत्तापूर्ण रूप से शोध कार्य अपनी मंजिल तक पहुँच पाता है। प्रस्तुत शोध में शोध विधि निम्नवत है :–

अध्ययन क्षेत्र– शोध के लिए आँकड़ों का संकलन लखनऊ जनपद में किया गया है। इन जनपदों में रहने वाली एकल महिलाओं जिनमें विधवा, तलाकशुदा, परित्यक्त और अविवाहित सम्मिलित हैं, को उत्तरदात्रियों के रूप में सम्मिलित करके आँकड़ों का संकलन किया गया है।

अनुसन्धान प्ररचना– प्रस्तुत शोध में अन्वेष्णात्मक अनुसन्धान प्ररचना का प्रयोग किया गया है, क्योंकि एकल महिलाओं के संबंध में बहुत कम शोध हुए हैं, जिससे इनके संबंध में बहुत से तथ्य अभी तक बाहर नहीं आ सके हैं।

निदर्शन– शोध में निदर्शन विधि की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। उपयुक्त निदर्शन विधि का चयन ना करने पर शोध की विश्वनीयता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। प्रस्तुत शोध में व्यापक चिंतन के उपरांत स्नोबाल निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

निदर्श का आकार– कुल 60 उत्तरदात्रियों को शोध में सम्मिलित करके आँकड़ों को संकलित किया गया है।

आँकड़ा संकलन की तकनीकि– प्रस्तुत शोध में आँकड़ों के संकलन के लिए प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। चूँकि समग्र का शिक्षित होना अनिवार्य नहीं है, इसलिए शोधार्थिनी के लिए यह अनिवार्य हो जाता है, कि वह ऐसी विधि का प्रयोग करे, जिससे समुचित रुप से आँकड़ों का संकलन किया जा सके।

आँकड़ों का विश्लेषण–

तालिका संख्या–1 : उत्तरदात्रियों के एकल प्रस्थिति का स्वरूप

एकल प्रस्थिति का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
अविवाहित	20	33.33%
परित्यक्ता	20	33.33%
तलाकशुदा	20	33.33%
विधवा	20	33.33%
कुल	**80**	**100.0**

तालिका संख्या–1 में प्रदर्शित आँकड़ों से स्पष्ट है कि अध्ययन में सभी वर्ग की एकल महिलाओं की सामान रूप से भागीदारी सुनिश्चित करते हुए सम्मिलित किया गया है, ताकि एकल महिलाओं के संबंध में विश्वसनीय और वैध निष्कर्ष निकालकर सामान्यीकरण किया जा सके।

तालिका संख्या–2 : उत्तरदात्रियों की आयु

आयु वर्ग (वर्ष में)	संख्या/प्रतिशत	अविवाहित	परित्यक्ता	तलाकशुदा	विधवा	कुल
18-30	संख्या	0	13	15	1	**29**
	प्रतिशत	0%	65%	75%	5%	**36.25%**
31- 40	संख्या	11	6	4	2	**23**
	प्रतिशत	55%	30%	20%	10%	**28.75%**
41- 50	संख्या	6	1	1	2	**10**
	प्रतिशत	30%	5%	5%	10%	**12.5%**
51- 60	संख्या	2	0	0	4	**6**
	प्रतिशत	10%	0%	0%	20%	**7.5%**
से 60	संख्या	1	0	0	11	**12**
अधिक	प्रतिशत	5%	0%	0%	55%	**15%**
कुल	**संख्या**	**20**	**20**	**20**	**20**	**80**
	प्रतिशत	**25%**	**25%**	**25%**	**25%**	**100%**

तालिका संख्या–2 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक अविवाहित एकल महिलाएं 31–40 आयु वर्ग की हैं और सर्वाधिक परित्यकत एकल महिलाएं 18–30 आयु वर्ग की तथा सर्वाधिक तलाकशुदा एकल महिलाएं भी 18–30 आयु वर्ग की हैं।

विधवा एकल महिलाओं का सर्वाधिक प्रतिशत 60 से अधिक आयु वर्ग में है। यह निष्कर्ष निकलता है कि महिलाओं का सर्वाधिक परित्याग 18–30 आयु के के मध्य होता है और सर्वाधिक तलाक भी 18–30 आयु के बीच होता है तथा अधिकतर महिलाओं के पति की मृत्यु 60 वर्ष के बाद होती है जिसके कारण वह विधवा हो जाती हैं। सर्वाधिक अविवाहित महिलाएं 31–40 आयु के मध्य हैं, जबकि 41–50 आयु वर्ग के मध्य अविवाहित महिलाओं की संख्या में कमी आती है, जो यह दर्शाता है कि महिलाओं में विलंब विवाह को प्राथमिकता दी जाती है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

तालिका संख्या–3 : उत्तरदात्रियों का शैक्षिक स्तर

शैक्षिक स्तर	संख्या/प्रतिशत	अविवाहित	परित्यक्ता	तलाकशुदा	विधवा	कुल
अशिक्षित	संख्या	3	6	3	11	23
	प्रतिशत	15%	30%	15%	55%	28.75%
प्राइमरी	संख्या	2	3	4	5	14
	प्रतिशत	10%	15%	20%	25%	17.5%
जूनियर हाई-स्कूल	संख्या	0	4	2	2	8
	प्रतिशत	0%	20%	10%	10%	10%
हाई-स्कूल	संख्या	2	3	4	1	10
	प्रतिशत	10%	15%	20%	5%	12.5%
इंटरमीडिएट	संख्या	1	1	4	0	6
	प्रतिशत	5%	5%	20%	0%	7.5%
स्नातक	संख्या	5	2	2	1	10
	प्रतिशत	25%	10%	10%	5%	12.5%
परा-स्नातक	संख्या	6	1	1	0	8
	प्रतिशत	30%	5%	5%	0%	10%
एम.फिल./पी.एच.डी.	संख्या	1	0	0	0	1
	प्रतिशत	5%	0%	0%	0%	1.25%
कुल	**संख्या**	**20**	**20**	**20**	**20**	**80**
	प्रतिशत	**25%**	**25%**	**25%**	**25%**	**100%**

तालिका संख्या–3 में प्रस्तुत तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 55% अशिक्षा विधवा महिलाओं में है। कुल एकल महिलाओं में से सर्वाधिक 30% अविवाहित एकल महिलाओं की उच्चतम शिक्षा परा–स्नातक है. उच्चतम शिक्षा स्नातक में भी अविवाहित महिलाओं की संख्या अधिक (25%) है। कुल 80 एकल महिलाओं में से सर्वाधिक 28.5% एकल महिलाएं अशिक्षित हैं जबकि न्यूनतम 1.25% एकल महिलाएं एम.फिल./पी.–एच.डी. उपाधि प्राप्त हैं। निष्कर्षतः यह स्पष्ट है कि लगभग एक–चौथाई एकल महिलाएं अशिक्षित हैं तथा अविवाहित एकल महिलाओं की भागीदारी उच्चतम शिक्षा में अधिक है। विधवा और तलाकशुदा एकल महिलाओं में यह भागीदारी लगभग नगण्य है।

तालिका संख्या–4 : उत्तरदात्रियों की मासिक आय (हजार में)

मासिक आय (हजार में)	संख्या	प्रतिशत
परिवार पर आश्रित	8	10%
0-10000	25	31.25%
10000-20000	27	33.75%
20000-30000	15	18.75%
30000-40000	4	5%
40000-50000	1	1.25%
50000 से अधिक	0	0%
कुल	**80**	**100.0**

तालिका संख्या–4 का संबंध उत्तरदात्रियों की मासिक आय से है। तालिका के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सर्वाधिक एकल महिलाओं की आय 10000–20000 के मध्य है, जबकि न्यूनतम 1.25: एकल महिलाओं की आय 40000–50000 के मध्य है। कुल 10% एकल महिलाएं परिवार की आय पर भी निर्भर हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि एकल महिलाओं की आय बहुत कम है। वर्तमान मंहगाई के अनुपात में यह आय तुच्छ सी प्रतीत होती है, क्योंकि इतनी कम आय में जीवन निर्वाह करना किसी चुनौती से कम नहीं है। कुल मिलाकर यह कहना सही रहेगा कि एकल महिलाओं के समक्ष गंभीर आर्थिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

तालिका संख्या–5 : एकल महिलाओं की मनो–सामाजिक स्थिति का विश्लेषण

कथन		पूर्णतः असहमत	असहमत	तटस्थ	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
1. एकल महिलाओं द्वारा भावनात्मक तनाव अनुभव करने की स्थिति	संख्या	3	9	3	37	28	80
	प्रतिशत	3.75 %	11.25 %	3.75 %	46.25 %	35 %	100 %
2. एकल महिलाओं द्वारा सामाजिक रूप से असुरक्षित महसूस करने की स्थिति	संख्या	7	5	0	25	43	80
	प्रतिशत	8.75%	6.25%	0%	31.25%	53.75%	100%
3. एकल होने के कारण मानसिक तनाव अनुभव करने की स्थिति	संख्या	6	6	5	20	43	80
	प्रतिशत	7.5%	7.5%	6.25%	25%	53.75%	100%
4. जीवन शैली से संतुष्टि की स्थिति	संख्या	21	39	2	13	5	80
	प्रतिशत	26.25%	48.75%	2.5%	16.25%	6.25%	100%
5. एकल होने के कारण आप अलगाव महसूस करती हैं.	संख्या	2	5	4	31	38	80
	प्रतिशत	2.5%	6.25%	5%	38.75%	47.5%	100%
6. समाज में आपके साथ भेद-भाव पूर्ण व्यवहार किया जाता है.	संख्या	2	4	3	27	44	80
	प्रतिशत	2.5%	5%	3.75%	33.75%	55%	100%
7. सामाजिक और धार्मिक कार्यों से आपको वंचित किया जाता है.	संख्या	19	13	7	18	23	80
	प्रतिशत	23.75%	16.25%	8.75%	22.5%	28.75%	100%

तालिका संख्या–5 का संबंध एकल महिलाओं की मनो–सामाजिक स्थिति के विश्लेषण से है। कुल 80 एकल महिलाओं को शोध में सम्मिलित किया गया है। तालिका में सम्मिलित प्रत्येक प्रश्न एक स्वतंत्र इकाई है। इसलिए प्रत्येक प्रश्न का अलग–अलग विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष से स्पष्ट है कि तीन–चौथाई से अधिक एकल महिलाएं भावनात्मक तनाव,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

सामाजिक रूप से असुरक्षा, मानसिक तनाव, जीवन–शैली से असंतुष्टि, अलगाव और भेद–भाव पूर्ण व्यवहार महसूस करती हैं। लगभग 50% एकल महिलाएं सामाजिक और धार्मिक कार्यों से वंचना महसूस करती हैं। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि एकल महिलाओं की मनो–सामाजिक स्थिति निम्न स्तर की है, जिसके कारण एकल महिलाओं को मनो–सामाजिक स्तर पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

तालिका संख्या–6 : एकल महिलाओं में आर्थिक संघर्ष की स्थिति का अध्ययन

कथन		पूर्णतः असहमत	असहमत	तटस्थ	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
1. एकल महिलाओं में आर्थिक असुरक्षा महसूस करने की स्थिति	संख्या	4	6	0	31	39	80
	प्रतिशत	5%	7.5%	0%	38.75%	48.75%	100%
2. कम आय से संबंधित समस्या अनुभव करने की स्थिति	संख्या	4	5	3	28	40	80
	प्रतिशत	5%	6.25%	3.75%	35%	50%	100%
3. एकल महिलाओं में कर्ज लेने की स्थिति	संख्या	21	0	4	0	55	80
	प्रतिशत	26.25%	0%	5%	0%	68.75%	100%
4. आधारभूत आवश्यकताएं पूर्ण ना होने की स्थिति	संख्या	9	7	4	19	41	80
	प्रतिशत	11.25%	8.75%	5%	23.75%	51.25%	100%

तालिका संख्या–6 में दिए गये एकल महिलाओं के आर्थिक संघर्ष की स्थिति के विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि एकल महिलाओं में आर्थिक असुरक्षा, कम आय से संबंधित समस्या, कर्ज लेने की स्थिति और आधारभूत आवश्यकताओं की अपूर्णता से संबंधित समस्याएं उच्च स्तर की हैं। एकल महिलाओं को आर्थिक स्तर पर संघर्षमय जीवन व्यतीत करना पड़ता है। आय के साधन कम होने के कारण यह समस्या अधिक विकराल हो जाती है। बेरोजगारी के कारण एकल महिलाओं को कम आय पर अपनी सेवाएं देनी पड़ती है, जिसके कारण उनकी आर्थिक समस्याएं और बढ़ जाती हैं।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध में कुल 80 एकल महिलाओं से प्राप्त अभिमत के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये हैं। शोध निष्कर्ष से यह परिलक्षित होता है कि मनो–सामाजिक और आर्थिक स्तर पर एकल महिलाओं में उच्च स्तर की चुनौतियाँ विद्यमान हैं। एकल महिलाओं में सहारे की कमी के कारण भावनात्मक तनाव, असुरक्षा, मानसिक तनाव, वंचना, आर्थिक असुरक्षा, कर्ज जैसी समस्याएं अधिक पायी गयी। यह समस्याएं एकल महिलाओं के स्वस्थ विकास में अवरोध उत्पन्न करती हैं. इन महिलाओं को सामान्य महिलाओं की तुलना में अधिक वंचना का सामना करना पड़ता है। सरकारी और गैर–सरकारी स्तर पर एकल महिलाओं की कमजोर स्थिति में सुधार लाने के लिए संपूर्णता उपागम पर प्रयास करने होंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, डॉ. अमिता (2019), 'लिंग एवं सामाजिक–सांस्कृतिक व्याख्या', लिंग एवं समाज, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–49.
2. Low income single women demand public funds to live with dignity - The Hindu
3. The Indian women calling themselves 'proudly single' (bbc.com)
4. अंतरराष्ट्रीय महिला दिवसः भारत की महिलाएं क्या समृद्ध और सशक्त हो रही हैं? – BBC News हिंदी
5. महिलाओं की स्थितिः परिवारों में ही है बदलाव की बुनियाद द्य संयुक्त राष्ट्र समाचार (un.org)
6. Dr. Zakiya Rafat (2018), "Ekal Aviwahit Mahilaaon Ki Samasyayen Tatha Chunautiyan" Shodh Manthan, 2018. Https://Doi.Org/10.31995/Shodhmanthan
7. Sheemoyee Piu Kundu (2018), "Status Single : The Truth About Being Single Woman In India", Thompson Press India, Page 200-2018.
8. Dasgupta Pritha, "Women Alone : The Problems And Challenges Of Widows In India", International Journal Of Humanities And Social Sciences (IJHSS), Vol.6., Issue 6, Oct-Nov 2017.

*****